विकासशील भारतीय कला

डॉ0 सुनीता शर्मा,

असिस्टेंट प्रोफेसर–ललित कला विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ

राजा रवि वर्मा के 1848 में उदय के साथ आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधुनिक काल का उदय माना जाता है। इस आधुनिक कलाकार ने प्राचीन भारतीय चित्रकला की परम्पराओं की उपेक्षाकर अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए पाश्चात्य चित्रकला की नैसर्गिक अभिव्यक्ति का अनुकरण करना प्रारम्भ किया। इन्होंने यूरोपियन स्टूडियो की शैली को अपनाया और भारतीय पौराणिक कथाओं में अंग्रेजी पद्धति लाकर चित्र बनाना प्रारम्भ किया। इनके बनाये पौराणिक व हिन्दू देवी–देवताओं के चित्र साधारण मनुष्य जैसे थे, मगर देवत्व भाव से शून्य आधुनिक अंग्रेजी ढंग की सजावट के रूप में इन चित्रों ने सहज ही स्थान पा लिया। राजा रवि वर्मा को सही मायने में कला को जन–जन तक पहुँचाने और भारत में तैल–चित्रण प्रारम्भ करने वाला अग्रणी कलाकार माना जाता है। यहां से भारतीय चित्रकला की अवरूद्ध धारा एक नये पथ की ओर अग्रसर रही।

भारतीय कला इतिहास में जब भारत की कला को आधुनिकता का सम्बोधन मिला, तब उसकी सांस्कृतिक परिस्थितियां अत्यधिक विषम थी। अंग्रेजों द्वारा स्थापित आर्ट कालेजों में विक्टोरियन परम्पराओं के तहत भारतीय कलाकारों को प्रशिक्षित किया जा रहा था। इसके अलावा अन्य रियासतों द्वारा खोले गये आर्ट्स कालेजों का पाठ्यक्रम भी विदेशी पद्धति पर आधारित था। भारतीय मान्यताओं, परम्पराओं और राष्ट्रीय भावनाओं से दूर नवीन यूरोपियन विधाओं से भारतीय कला विद्यार्थियों को परिचित कराया गया। इस कला प्रणाली ने नवीन कला की सृष्टि तो की, लेकिन भारतीय संस्कृति पर गहरा आघात भी किया।

संस्कृति के ऐसे विप्लवकारी युग में अवीन्द्र नाथ टैगोर ने भारतीय कला को विदेशी जकड़ से मुक्त कर नया जीवन दिया। अवनीन्द्रनाथ के साथ लॉर्ड कर्जन और ई0वी0 हेवेल ने अंग्रेज होने के बावजूद भारतीय कला के मूल्यों को पुनर्स्थापित करने का प्रयास किया जो बाद में बंगाल में पुनर्जागरण काल के नाम से जाना गया। हेवेल ने अजन्ता, राजपूत और मुगल कलाकृतियाँ और भारतीय कला के मौलिक तत्वों को पहचानने का भारत से आग्रह किया। सम्भवतः भारतीय कला को उनके योगदान को देखते हुए उन्हें भारतीय चित्रकला की नवीन पद्धति का पिता कहते हैं।

19वीं सदी के उत्तरार्ध में भारतीय कला पर यूरोपियन शैली का प्रभाव हावी हो चुका था। अतः भारतीयता के शुभचिंतकों ने ऐसे में एक कला आन्दोलन की आवश्यकता महसूस कर उस पर बल दिया। अवीन्द्रनाथ टैगोर ने 1866 ई0 के लगभग अपनी आवाज और मुखर करते हुए प्राचीन भारत और अन्य एशियाई देशों की चित्रकला का अध्ययन कर उसे आधुनिक भारत की आवश्यकताओं के अनुकूल बनाना प्रारम्भ किया। उन्होंने संग्रहित चीनी व जापानी चित्रों से आधुनिक भारतीय चित्रकला की नवीन शैली का गठन किया मुगलकालीन लघु चित्रों की

सर्वोत्कृष्ट विशेषताओं को अपनाकर उन्होंने मुगल शैली को नया जीवन दिया।

इस तरह अवीन्द्रनाथ तथा उनके शिष्यों ने नवीन कला जागृति को कार्य के रूप में परिवर्तित करना शुद्ध किया। धीरे–धीरे इस कला आन्दोलन ने विस्तृत रूप धारण कर लिया। उस समय गांधी जी के राष्ट्रीय आन्दोलन से इस कला आन्दोलन को सहायता मिली और थोड़े दिनों में ही यह आन्दोलन भी राष्ट्रव्यापी हो गया। उच्चकोटि के कलाकारों में से एक अवीन्द्रनाथ के भाई गगेन्द्रनाथ ने भी इस आन्दोलन में योगदान किया। भारतीय कलाकारों को शिक्षा व उनकी प्रदर्शनियां आयोजित करने के उद्देश्य को लेकर उन्होंने इण्डियन सोसायटी ऑफ ओरियन्टल आर्ट संस्था की स्थापना की। यह अलग बात है कि इस संस्था के ज्यादातर सदस्य यूरोपियन थे। इसके तहत अवीन्द्रनाथ और उनके शिष्यों ने जिस कला का प्रचार किया वह बंगाल स्कूल के नाम से विख्यात है। बंगाल शैली स्पष्ट, सरल व स्वाभाविक थी। कला की इस नवीन जागृति में भारतीय कला को गौरव प्रदान करने वालों में डा0 आनन्द कुमार स्वामी का नाम भी विशेष रूप में उल्लेखनीय है। इन्होंने विलुप्त होती भारतीय परम्परा को एक नई सजीवता से आगे बढ़ाया।

इस दौर में कुछ ऐसे कलाकार भी हुए जिन्होंने बंगाल स्कूल से प्रभावित हुए बगैर अपनी व्यक्तिगत शैली से जागृति आन्दोलन में अपना योगदान दिया। शेष भारत में भी समसामयिक पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते यामिनी राय, अमृता शेरगिल, हेब्बर, चावड़ा, बेन्द्रे, हुसैन, पानिकर जैसे युवा चित्रकार मौलिक रचना विधा, शैलीगत रूचियों के साथ निष्ठा और दायित्व के साथ कार्यशील हुए। इन्होंने स्वतंत्रतापूर्व अपने युवाकाल में अपने सृजन से भारतीय आधुनिक कला को नवीन आयाम दिया।

बीसवीं सदी के चौथे दशक में संचार साधनों के विकास भारतीय कलाकारों के विदेश प्रवास, फोटोग्राफी, गरीबी, विश्वयुद्ध और देश के विभाजन ने कुछ ऐसी परिस्थितियां पैदा की कि युवा कलाकारों का मन बंगाल शैली से न बहल सका। सूजा, रजा, आरा, अकबर पद्मसी आदि भारतीयता के जाने को छोड़ अन्तर्राष्ट्रीयता की आवाजें लगाने लगे तो अनेक ने विदेशी 'वादों' से प्रभावित होकर अपनी शैली का गठन किया। माने, पॉल, गोगा, मातिस, पिकासो से कुछ भारतीय कलाकार सीधे प्रभावित हुए।

स्वतंत्रता पश्चात् पचास के दशक में कुछ कलाकारों ने विदेशों में फ्रांस, इंग्लैण्ड, अमेरिका की यात्रा की इस समय पश्चिम में कला तकनीकी प्रभावोत्पादक परिवर्तन पर गहनता से विचार हुआ। हेब्बर, बेन्द्रे अपने सृजन के शिखर पर थे। यामिनी राय की सृजन धारा विषयों की विविधता में डूबी हुई थी। 1941 में अमृता शेरगिल की अल्प आयु में मृत्यु होने के बावजूद भी कला सृजन का अक्षय भण्डार कलात्मक संस्कृति की थाती सिद्ध हुआ।

साठ के दशक में भारत की कला में तकनीकी रूप में 'स्पेक्ट्रम' को बल मिला। इस समय भारतीय कलाकार कला की किसी पारिभाषिक शब्दावली से आबद्ध न थे। उनके सृजन में वातावरण के सूक्ष्म अध्ययन महाकाय औद्योगिक वातावरणीय प्रभाव था। यामिनी राय, हेब्बर, बेन्द्रे के चित्रों की तकनीकी प्रवन्जना पूर्णता मौलिक थी।

सत्तर के दशक में भारत के आधुनिक कला के प्रवाह में पचास के दशक का युवा कलाकार निरन्तर कार्य करता हुआ अपने प्रौढ़ अनुशीलन तक पहुंच चुका था। सत्तर के दशक के प्रारम्भ में ही 1972 में यामिनी राय के स्वर्गवास के क्षणों में भी उनकी कला का भारतीय लोकत्व अनेक समकालीन कलाकारों की प्रेरणा का स्त्रोत बना। हेब्बर की कला यात्रा मूर्त आकारों से बनी हुई सूक्ष्य बिम्बों में परिवर्तित होने लगी थी। सत्तर के दशक का मार्च 80 एवं 90

के दशक के युवा कलाकारों को आज भी सम्मोहन प्रदान किए हुए हैं। बेन्द्रे के चित्रों में तकनीकी प्रबन्जनाओं में भारतीयता की झलक 80, 90 के दशक के कलाकारों के लिए अध्ययन का विषय बना हुआ है।

वैज्ञानिक संचार व्यवस्था, शीघ्र अति शीघ्र यातायात व्यवस्था एवं कला साहित्य के साधन के कारण भारतीय कलाकार आज अन्तर्राष्ट्रीय प्रारूपों से पूरी तरह परिचित हैं। वास्तव में इन दशकों में भारतीय आधुनिक कला आधुनिकता का आवरण त्यागकर भारतीय समकालीन कला में प्रतिष्ठित हो चुकी है। हुसैन, गुजराल, गणेश, पाइने, मनजीत बाबा, विकास भट्टाचार्य, गणेश हलोई, अर्पिता सिंह, परमजीत सिंह ने भारतीय कला को प्रतिष्ठित करने में महती योगदान दिया फिर भी जो स्थान समकालीन कला को प्रतिष्ठित करने में हेब्बर और बेन्द्रे ने दिया उसे भारतीय कला समीक्षक न तो आज और न ही भविष्य में विस्मृत कर सकते हैं।

आज जब हम 21वीं सदी में प्रवेश कर रहे हैं तब सबसे बड़ा आश्चर्य ये है कि कला समीक्षक आज भी कलाकारों को पश्चिमी वादों के नजरिये से देखने का प्रयास कर रहते हैं।

शायद यही वजह है कि आज भी जनमानस में भारतीय कला पर पश्चिमी प्रभाव के आवरण का भ्रम बना हुआ है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आधुनिक भारतीय चित्रकला–राजेन्द्र बाजपेयी
2. मार्डन आर्ट और भारतीय चित्रकार–राजेन्द्र बाजपेयी
3. आधुनिक चित्रकला का इतिहास–रवि साखलकर

Copyright © 2017, Dr. Sunita Sharma. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.